

बालिका निरक्षर ना रहे। वे देश की शैक्षिक दुर्दशा देखकर आहत हो जाते थे। देश में व्यापक नारी
fuj {kjr k dks Hkjr rh; ka ds iru dk मुख्य कारण मानते थे। इसलिए उन्होंने नारी शिक्षा पर विशेष बल
दिया। वे मानते थे कि नारी को इस प्रकार शिक्षा दी जाए ताकि उसकी बुद्धि का विकास हो सके,
ekuf l d 'k fDr c<+l d} pfj= dk; e jg l ds vkj og vi us i} ka ij [kMh gks l dA ukjh ds ifr
विश्वास, श्रद्धा व नम्रता होनी चाहिए। उनका उद्देश्य नारी जाति के सूखे वृक्षों को हरा-भरा करना था।

mlgkaus Økfr dh vi}kk l qkkj ds ekxZ dks vi uk; kA bl dk; l ds fy, mlgkaus onka dh
l gk; rk yhA mlgkaus cky fookg dk i w k foj k k fd; k r Fkk i u fookg dks Lohdfr inku dhA mudk
मानना था कि यदि नारी अशिक्षित होगी तो कोई भी कार्य नहीं कर पाएगी। इसलिए नारी को सभी
प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने ब्रह्मचार्य पर cgr cy fn; k gA os dgrs Fks fd tc rd
ckyd o ckfydk cgpkj h o cgpkj . kh jg l d a j gA

Loket n; kun ds fopj ka dks ; fn xhkhjrk l s ns[kk tk, rks ; gh Kkr gkrk gS fd Hkjr ds
पतन और अवनति का एक प्रमुख कारण स्त्रियों की अशिक्षा है इसलिए प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि
अपने समस्त ज्ञान को नारी में समान रूप से वितरित कर दे। स्त्री शिक्षा से gh fgln tkfr dk fodkl
l Ethko gA okLro ea ; fn ge or}eku fopj/kjk ds i Hkko dks cny l d a rks turk ea fQj ml
पुरातन, श्रद्धा के जागृत होने की आशा की जा सकती है। श्रद्धा, आत्मबल, आत्मविश्वास जगाने का
उपाय केवल यही है कि प्रत्येक युवक व युवती को सुशिक्षित तथा सd l dr fd; k tk, A

Loket n; kulln ds vuq kj] Bor}eku dh du; k, a gh Hkfo"; dh ekrk, a , oa tuuh gkxhA P L=h
शक्ति की सजीव प्रतिमा है। शिक्षा द्वारा ही स्त्रियों की प्रत्येक समस्या का समाधान हो सकता है।
आधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों की शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षित व धार्मिक माताओं के
?kj gh egki # "k tle yrs gA ukjh dh mluf r l s Kku] 'क्ति तथा संस्कृति का सम्पूर्ण देश में
tkxj . k gks tk, xkA

Loket th dgrs Fk, "सुशिक्षित व सचरित्रवान नारियाँ शिक्षा का कार्यभार अपने ऊपर लें। इस
उद्देश्य की पूर्ति हेतु गाव व शहरों में शिक्षा प्रसार केन्द्र खोलकर इसका प्रचार करें व निष्ठावान
उपदेशिकाओं के द्वारा देश में स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार सम्भव होगा। सच में स्वामी दयानन्द भारत
के महान, लोकप्रिय शिक्षक थे। उनकी शिक्षा व्यक्तिगत ही नहीं अपितु सामाजिक भी थी। वे संस्कृ ds
egku fo}ku vkj tu l ekt ds ifr fuf/k FkA vjfon ?kksk ds vuq kj] B Loket n; kulln fn0; Kku ds
सच्चे सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाले योद्धावीर मनुष्यत्व व संस्थाओं का शिल्पी तथा
i dfr }kjk vkRek ds ekxZ ea mi l Fkr dh tkus okyh ck/kvka dk ohj & fo trk FkA P

पाठशाला जाना पड़ता था। लेकिन स्त्रियों को घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं थी। जिनके कारण उन्हें शिक्षा प्राप्त नहीं हो पाई।

भारत में स्त्रियों को अशिक्षित रखा जाता था। उसे किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। उसकी स्थिति शिक्षा के अभाव में दीन-हीन होती जा रही थी। उसे अपने अधिकारों का उपयोग नहीं करना पड़ता था।

श्री १ : स्वामी दयानन्द ने स्त्रियों को एक गृहणी और गृहस्थी की खुशियाँ दे दीं। उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा देने का महत्त्व बताया। उन्होंने स्त्री को शिक्षित करने के लिए एक परिवार के साथ-साथ पूरा समुदाय, समाज व राष्ट्र शिक्षित होगा। माता-पिता को भी शिक्षित करना पड़ेगा।

नारी शिक्षा एवं आर्य समाज नारी को शिक्षित करने के लिए तथा विभिन्न सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए। उन्होंने स्त्री शिक्षा के विचार को प्रचारित किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा के विचार को प्रचारित किया। उन्होंने स्त्री शिक्षा के विचार को प्रचारित किया।

सत्यार्थ प्रकाश & Lokesh n; kulln I jLorh
I gk; d xtlFk

vk/kfud Hkkjr dk bfrgkl &

vk; Zl ekt vkfj Hkkjrh; jk"Vbkn &

vk; Zl ekt dk bfrgkl %i Fke [k. M%&

vk; Zl ekt dk bfrgkl %tkyWkj&1983%

vk; Zl ekt dk bfrgkl %cxyki j&1972%

vk; Zl ekt ds cfynku %jkg rd%

vk; Zl ekt &

vk; Zl ekt के आदर्श पुरुष (प्रथम खण्ड)

vk; Zl ekt ds f}oxr egki#%ka ds thou]

vk/nkyu rFkk i dfr; ka %verl j%

vk; Zl ekt %ublfnYyh&1991%

vk/kfud Hkkjr dk I kelftd o vk/fkd bfrgkl

वर्ष समाज अतीत की उपलब्धियां और भविष्य का प्रश्न

vk/kfud Hkkjr dk bfrgkl

vk; Zl ekt dk bfrgkl Hkkx&1

vk; Zl ekt YimE epeW okY; e&1

vk; Z/keZ

vk; Zl ekt , .M bVI fMVDVjVI ykgfj 1910

vk; Zl ekt dh mi yfUk; %j ublfnYyh

vk/Vs ck; kxkQh vkQ n; kulln I jLorh

vk/kfud Hkkjr dk bfrgkl

आर्य निर्देशिका

bllVjefj t vkQ fglmfon ; jikfi ; u , .M vlnj uku

fglnm yfM t

इण्डियन एण्ड वर्ड सिविलाइजेशन

__f" k n; kulln vk; Zl ekt dh I L dfr I kfgR; dks nu

n; kulln I jLorh %fgt ykbQ , .M vkbFM; kt

%fnYyh&1978%

n; kulln xtlFkekyk %i Fke [k. M%

n; kulln I jLorh

n ekjy oeu , .M vcu iatkc I kd kbMh vkQj yv

19 I %pjh %tu&1992%

n; kulln vkfj vk; Zl ekt] egf"kl I ekt %jkg rd&1988%

n; kulln 'kod

दयानन्द मिशन इन दयानन्द कमैमोरेशन वाल्यूम-2

f}0; n; kulln

ukjh nizk

vkj; y- 'kQy

/kui fr ik. Ms

I R; drqfo /kyd kj

Nktjike fl g

ukeno

Lokesh vk/kulln I jLorh

ia xaxk id kn mikk; {k

nhukukFk fl }kllrkyd kj

ia देव प्रकाश जी

शिव कुमार गुप्ता

irki fl g

Hkokuh yky Hkkjrh

ch; y- xkaj

blnz fo /kok; Li fr

dsi h; ; kno

dsMcy; # tkbl

मुन्शी राम

nhukukFk fl }kllrkyd kj

dsi h; ; kno

दिनेश चन्द्र भारद्वाज

ओमप्रकाश त्यागी

ch;jkek 'kkl=h

Mh-i-h; fl %ky

Jh Hkokuh yky Hkkjrh;

tsVh; e- tkMLu

Jh eRi jegd i fjaktdkpk; ZLokesh n; kulln

आचार्य जगदीश विद्यार्थी

अंशु मल्होत्रा

, e; y- Bkdj

nhoku pln

xkdy pln ukjx

जगदीश चन्द विद्यार्थी

Jh foHkkl dj I fPpnkulln 'kkl=h